

राम मंदिर चढ़ावा विवाद पहुंचा सुप्रीम कोर्ट, सीबीआई जांच की मांग से बड़ी सियासी और कानूनी हलचल

नई दिल्ली। अयोध्या में भगवान श्रीराम के भव्य मंदिर को लेकर देशभर में करोड़ों लोगों की गहरी आस्था जुड़ी हुई है। इसी बीच मंदिर में प्राप्त चढ़ावे और दान राशि के कथित गबन तथा वित्तीय अनियमितताओं से संबंधित आरोपों ने नया मोड़ ले लिया है। अब यह मामला सीधे देश की सर्वोच्च अदालत तक पहुंच गया है। सुप्रीम कोर्ट में दायर एक जनहित याचिका में राम मंदिर से जुड़े वित्तीय लेन-देन, चढ़ावे के उपयोग और ट्रस्ट के प्रशासनिक कामकाज की व्यापक जांच की मांग की गई है। याचिका में न केवल तत्काल एफआईआर दर्ज करने की अपील की गई है, बल्कि पूरे मामले की जांच केंद्रीय अन्वेषण ब्यूरो (सीबीआई) के नेतृत्व वाली विशेष जांच टीम (एसआईटी) से करने की मांग भी उठाई गई है। इस याचिका ने एक बार फिर मंदिर

ट्रस्ट की कार्यप्रणाली और दान राशि के प्रबंधन को लेकर बहस छेड़ दी है। याचिकाकर्ताओं का कहना है कि यह मामला केवल वित्तीय अनियमितताओं तक सीमित नहीं है, बल्कि करोड़ों श्रद्धालुओं की आस्था और विश्वास से भी जुड़ा हुआ है। इसलिए किसी भी प्रकार के आरोपों की निष्पक्ष, पारदर्शी और समयबद्ध जांच होना आवश्यक है ताकि सच सामने आ सके और जनता का भरोसा कायम रहे।

दो प्रैक्टिसिंग वकीलों की ओर से दाखिल इस जनहित याचिका में केंद्र सरकार, उत्तर प्रदेश सरकार और श्री राम जन्मभूमि तीर्थ क्षेत्र ट्रस्ट को प्रतिवादी बनाया गया है। याचिका में अदालत से यह भी आग्रह किया गया है कि मंदिरों और धार्मिक संस्थाओं में प्राप्त दान और चढ़ावे की निगरानी के लिए एक सशक्त नियामक, पथवैक्षी



प्रदेश सरकार द्वारा गठित एसआईटी को लेकर भी सामने आया है। याचिका में इस जांच प्रक्रिया पर सवाल उठाते हुए कहा गया है कि राज्य सरकार की एसआईटी ने बिना किसी औपचारिक एफआईआर या नियमित आपराधिक मामला दर्ज किए प्रारंभिक जांच शुरू



की है। याचिकाकर्ताओं का कहना है कि किसी भी गंभीर वित्तीय मामले में कानूनी प्रक्रिया का पालन करते हुए पहले प्राथमिकी दर्ज की जानी चाहिए और उसके बाद जांच एजेंसी को काम शुरू करना चाहिए। इसी आधार पर उन्होंने अदालत से सीबीआई जांच का

आदेश देने की मांग की है। गौरतलब है कि चढ़ावे और दान राशि में कथित गड़बड़ियों से संबंधित आरोप सामने आने के बाद उत्तर प्रदेश सरकार ने 13 जून को एक विशेष जांच दल का गठन किया था। इस तीन सदस्यीय एसआईटी में वरिष्ठ प्रशासनिक और पुलिस अधिकारियों को शामिल किया गया है। जांच दल को वित्तीय लेन-देन और अन्य संबंधित पहलुओं की जांच कर रिपोर्ट देने की जिम्मेदारी सौंपी गई है। हालांकि अब याचिकाकर्ताओं का कहना है कि इतनी संवेदनशील जांच

किसी स्वतंत्र केंद्रीय एजेंसी को सौंपना अधिक उचित होगा। कानूनी विशेषज्ञों के अनुसार सुप्रीम कोर्ट में दाखिल इस याचिका का महत्व केवल राम मंदिर तक सीमित नहीं है। यदि अदालत इस मामले में कोई व्यापक दिशा-निर्देश जारी करती है, तो देशभर के बड़े धार्मिक ट्रस्टों और संस्थानों के वित्तीय प्रबंधन एवं ऑडिट व्यवस्था पर भी उसका प्रभाव पड़ सकता है। धार्मिक संस्थानों में आने वाले चढ़ावे और दान की पारदर्शिता को लेकर समय-समय पर बहस होती रही है और यह मामला उस चर्चा को नई दिशा दे सकता है। वहीं दूसरी ओर, मंदिर से जुड़े समर्थकों का कहना है कि किसी भी निष्कर्ष पर पहुंचने से पहले जांच पूरी होने का इंतजार किया जाना चाहिए। उनका मानना है कि आरोपों और तथ्यों के बीच अंतर करना जरूरी है तथा किसी

भी संस्था की प्रतिष्ठा को बिना पर्याप्त प्रमाण के नुकसान नहीं पहुंचाया जाना चाहिए। उनका यह भी कहना है कि यदि कोई अनियमितता हुई है तो दोषियों के खिलाफ सख्त कार्रवाई होनी चाहिए, लेकिन जांच निष्पक्ष और तथ्यों पर आधारित होनी चाहिए। फिलहाल देश की निगाहें सुप्रीम कोर्ट पर टिकी हैं, जहां यह तय होगा कि याचिका पर सुनवाई स्वीकार की जाती है या नहीं और क्या अदालत इस मामले में सीबीआई जांच, एफआईआर दर्ज करने या किसी अन्य स्वतंत्र जांच तंत्र के गठन का निर्देश देती है। राम मंदिर से जुड़ी आस्था, राजनीति, कानून और पारदर्शिता के प्रश्नों ने इस मामले को राष्ट्रीय महत्व का विषय बना दिया है। आने वाले दिनों में अदालत की कार्यवाही इस पूरे विवाद की दिशा और भविष्य तय कर सकती है।

ग्रेट निकोबार परियोजना पर फिर सियासी घमासान, कांग्रेस ने उठाए पारदर्शिता और पर्यावरण सुरक्षा पर सवाल

नई दिल्ली। अंडमान-निकोबार द्वीप समूह में प्रस्तावित ग्रेट निकोबार विकास परियोजना एक बार फिर राजनीतिक और पर्यावरणीय बहस के केंद्र में आ गई है। कांग्रेस ने इस महत्वाकांक्षी परियोजना को लेकर केंद्र सरकार से कई गंभीर सवाल पूछे हैं और परियोजना की प्रक्रिया, निजी भागीदारी तथा पर्यावरणीय प्रभाव को लेकर पारदर्शिता की मांग की है। इस मुद्दे पर विपक्ष और सरकार के बीच पहले से चल रही बहस अब और तेज होती दिख रही है।



हालांकि, इस परियोजना को लेकर प्रयावर्णीय चिंताएं लगातार उठती रही हैं। जयप्रम रमेश ने अपने पत्र में कहा है कि परियोजना के बड़े पैमाने पर विकास कार्यों से ग्रेट निकोबार द्वीप की संवेदनशील पारिस्थितिकी, वन्यजीव और आदिवासी समुदायों पर गंभीर प्रभाव पड़ सकता है। उन्होंने विशेष रूप से ट्रांसशिपमेंट पोर्ट के निर्माण और उससे जुड़े औद्योगिक ढांचे के कारण संभावित पर्यावरणीय नुकसान पर चिंता व्यक्त की है। उन्होंने सरकार से यह स्पष्ट करने को कहा है कि परियोजना में निजी क्षेत्र की भूमिका किस स्तर तक होगी। उनके अनुसार यदि निजी

कंपनियों को 55 प्रतिशत या उससे अधिक हिस्सेदारी दी जाती है, तो क्या यह पूरी तरह निजी स्वामित्व की दिशा में कदम है या फिर इसमें सार्वजनिक क्षेत्र की भागीदारी को भी किसी न्यूनतम स्तर पर सुनिश्चित किया गया है। उन्होंने यह भी पूछा है कि क्या 100 प्रतिशत निजी स्वामित्व की संभावना को भी अनुमति दी जा रही है या नहीं। कांग्रेस नेता ने ट्रांसशिपमेंट पोर्ट के विकास के लिए अपनाई जाने वाली निविदा प्रक्रिया पर भी सवाल उठाए हैं। उन्होंने सरकार से कहा है कि निजी कंपनियों के चयन के लिए क्या समयसीमा तय की गई है और किस आधार पर कंपनियों को चुना जाएगा। उनका कहना है कि इतने बड़े और रणनीतिक महत्व के प्रोजेक्ट में पारदर्शी और प्रतिस्पर्धी प्रक्रिया का पालन अनिवार्य होना चाहिए। परियोजना के आलोचकों का मानना है कि ग्रेट निकोबार जैसे पारिस्थितिक रूप से संवेदनशील क्षेत्र में बड़े पैमाने पर निर्माण कार्य से समुद्री जैव विविधता, वन क्षेत्र और स्थानीय जनजातों समुदायों के जीवन पर असर पड़ सकता है। वहीं सरकार का पक्ष

है कि यह परियोजना राष्ट्रीय सुरक्षा, समुद्री व्यापार और आर्थिक विकास के दृष्टिकोण से अत्यंत महत्वपूर्ण है और इसे पर्यावरणीय मानकों के अनुरूप विकसित किया जाएगा। विशेषज्ञों का यह भी कहना है कि यह परियोजना भारत की रणनीतिक स्थिति को हिंद महासागर क्षेत्र में मजबूत कर सकती है, क्योंकि ग्रेट निकोबार अंतरराष्ट्रीय समुद्री मार्गों के बेहद करीब स्थित है। इससे भारत को वैश्विक व्यापार मार्गों पर बेहतर नियंत्रण और भागीदारी का अवसर मिल सकता है। फिलहाल इस मुद्दे पर केंद्र सरकार की ओर से कांग्रेस के पत्र पर विस्तृत प्रतिक्रिया सामने नहीं आई है, लेकिन राजनीतिक हलकों में इस परियोजना को लेकर बहस तेज हो गई है। एक ओर विकास और रणनीतिक हितों का बात हो रही है, वहीं दूसरी ओर पर्यावरण और पारदर्शिता को लेकर चिंताएं लगातार सामने आ रही हैं। आने वाले दिनों में यह देखना महत्वपूर्ण होगा कि सरकार इन सवालों का क्या जवाब देती है और क्या ग्रेट निकोबार परियोजना को लेकर कोई नई नीति या स्पष्ट दिशा-निर्देश सामने आते हैं। फिलहाल यह मामला विकास बनाम पर्यावरण की बहस का एक और बड़ा उदाहरण बनता जा रहा है, जिस पर पूरे देश की नजरें टिकी हुई हैं।

टीएमसी में बड़ा सियासी भूचाल: बागी गुट ने घोषित की नई कमेटी, ममता बनर्जी को पद से हटाने का दावा

कोलकाता। पश्चिम बंगाल की राजनीति में तुणमूल कांग्रेस (टीएमसी) के भीतर चल रहा सत्ता संघर्ष अब खुले टकराव में बदलता दिखाई दे रहा है। पार्टी के अंदर उभरे बागी गुट ने रविवार को एक बड़ा राजनीतिक कदम उठाते हुए खुद को “असली टीएमसी” घोषित कर दिया है। इस गुट ने पार्टी की मौजूदा नेतृत्व व्यवस्था को अस्वीकार करते हुए राष्ट्रीय अध्यक्ष ममता बनर्जी को पद से हटाने तथा पार्टी के वरिष्ठ नेता अभिषेक बनर्जी को निर्लंबित करने का दावा किया है। इस फैसले ने राज्य की राजनीति में नई हलचल पैदा कर दी है और पूरे घटनाक्रम को कानूनी तथा संगठनात्मक विवाद की ओर धकेल दिया है।



सूत्रों के अनुसार यह पूरी कवायद बागी विधायक ऋतब्रत बनर्जी के नेतृत्व में हुई एक बैठक के बाद सामने आई है, जो न्यू टाउन स्थित एक होटल में आयोजित की गई थी। इस बैठक में गुट ने दावा किया कि करीब 60 विधायक और कोलकाता नगर निगम के लगभग 70 पार्षद मौजूद थे। हालांकि इस दावे की स्वतंत्र पुष्टि अभी नहीं हो सकी है, लेकिन इस बैठक के बाद जारी बयान ने राजनीतिक हलकों में बहस जरूर छेड़ दी है। बैठक में बागी गुट ने संगठनात्मक ढांचे में बड़े बदलाव का एलान करते हुए हावड़ा मध्य से विधायक अरूप रॉय को नई “राष्ट्रीय कार्यकारी समिति” का अध्यक्ष नियुक्त करने की घोषणा की। इसके साथ ही संगठन को पुनर्गठित करने की प्रक्रिया शुरू करने का दावा भी किया गया है। गुट का कहना है कि वे अगले 21 दिनों के भीतर पार्टी के

फ्रंटल संगठनों का नया ढांचा तैयार करेंगे और संगठन को “मूल सिद्धांतों” की ओर वापस ले जाएंगे। इस तथाकथित नई व्यवस्था के तहत बागी गुट ने एक नई राष्ट्रीय कार्यकारी समिति का गठन भी घोषित किया है। इसमें कई नाम शामिल किए गए हैं। सूची के अनुसार अरूप रॉय को राष्ट्रीय अध्यक्ष बनाया गया है, जबकि संदीपन साहा, जावेद खान और ऋतब्रत बनर्जी को राष्ट्रीय महासचिव की जिम्मेदारी दी गई है। उपाध्यक्ष पदों पर फिरहाद हकीम, अरूप बिस्वास और रश्मि घोष जैसे नेताओं का नाम शामिल किए गए हैं। हालांकि यह स्पष्ट नहीं है कि इन नेताओं ने इस नई व्यवस्था को औपचारिक रूप से स्वीकार किया है या नहीं। इस घटनाक्रम का एक ओर गंभीर पहलू संगठनात्मक नियंत्रण और वित्तीय संसाधनों को लेकर उठाया गया दावा है। बागी गुट ने संकेत दिया है कि वह

बड़ी टूट की शुरुआत है या केवल एक सीमित बगावत है जिसका प्रभाव जल्द ही समाप्त हो जाएगा। कानूनी विशेषज्ञों का कहना है कि किसी भी राजनीतिक दल के भीतर समानांतर नेतृत्व का दावा तभी वैध माना जा सकता है जब वह पार्टी संविधान और चुनाव आयोग के नियमों के अनुरूप हो। ऐसे में यह मामला आगे चलकर चुनाव आयोग और न्यायालय तक भी पहुंच सकता है, यदि दोनों गुट अपने-अपने दावों पर अडिग रहते हैं। फिलहाल पश्चिम बंगाल की राजनीति इस अप्रत्याशित घटनाक्रम से गर्म हो गई है और सभी की निगाहें इस पर टिकी हैं कि ममता बनर्जी और उनकी पार्टी का आधिकारिक नेतृत्व इस चुनौती पर क्या प्रतिक्रिया देता है। आने वाले दिनों में यह स्पष्ट हो सकता है कि यह विवाद पार्टी के भीतर सुलह की ओर जाएगा या एक बड़े राजनीतिक विभाजन का रूप लेगा।

नवसर्जन संस्कृति

हिन्दी

Jio Air Fiber

Jio Tv +

Jio Fiber

Daily Hunt

ebaba Tv

Dish Plus

DTH live OTT

Rock TV

Airtel

Amezone Fire

Roku Tv-US.UK

देश-दुनिया के नवीनतम समाचार प्राप्त करने के लिए आज ही नवसर्जन संस्कृति हिंदी चैनल देखिये



नवसर्जन संस्कृति

PRGI No. GJHIN/25/A2786

नवसर्जन संस्कृति

PUBLISHED HIINDI DAILY FROM AHMEDABAD

वर्ष : 01

अंक : 260

दि. 23.06.2026,

मंगलवार

पाना : 04

किंमत : 00.50 पैसा

संपादकीय

गाड़ियों से ज़्यादा लोगों को मिले तरजीह

जब सुप्रीम कोर्ट यह कहता है कि सुरक्षित और तथ्यशुदा फुटपाथ पर चलना आम व्यक्ति का मौलिक अधिकार है, तो इसके ख़ास मायने हैं। अदालत उस हकीकत की ओर नीति-नियंताओं का ध्यान दिलाती है, जिसे अब तक भारतीय शहरों के नियोजन में नजरअंदाज किया गया। निश्चित रूप से सड़कों पर पहला हक लोगों का है, बाद में गाड़ियों का। सही मायने में कोर्ट ने पैदल चलने वाले लोगों के अधिकारों को जीवन, आजादी और कहीं भी आने-जाने की गारंटी से जोड़कर सार्थक पहल की है। अदालत ने इस तरह नागरिक जीवन की एक बुनियादी ज़रूरत को सार्वजनिक जवाबदेही का मुद्दा बना दिया है। यह एक हकीकत है कि देश के करोड़ों भारतीयों के लिये पैदल चलना रोजमर्रा की ज़रूरत है, न कि जीवनशैली का विकल्प। इनमें तमाम स्कूल जाने वाले बच्चे, बाज़ार जाने वाले बुजुर्ग, कम दूरी तक आने-जाने वाले कामगार और दिव्यांग लोग शामिल हैं, जिनके लिये सुरक्षित पैदल यात्रा जीवन की एक सुविधा है। यह विडंबना ही है कि अक्सर रेहड़ी-खोमचे वाले, गलत तरीके से सड़कों में खड़ी गाड़ियां और निर्माण कार्य से जुड़ा मलबा पैदल यात्रियों के रास्ते पर अतिक्रमण कर देता है। यही वजह है कि पैदल यात्रियों को व्यस्त सड़कों पर चलने के लिये मजबूर होना पड़ता है। जिससे अकसर उनका जीवन खतरे में पड़ सकता है। कोर्ट ने सख्त शब्दों में कहा है कि गाड़ी चलाने वाले पैदल चलने वाले लोगों के अधिकारों को नजरअंदाज नहीं कर सकते। सही मायने में यह टिप्पणी वाहन केंद्रित शहरी नियोजन की सोच पर सीधे प्रहार करती है।

यह विडंबना ही है कि शहरी सड़क परियोजनाओं में ट्रैफिक के प्रवाह को प्राथमिकता दी गई है। वहीं फुटपाथ को गैर ज़रूरी माना गया है। इसकी ही वजह से अकसर होने वाले सड़क हादसों का शिकार पैदल यात्रियों को होना पड़ता है। इसी दोषपूर्ण नीति के चलते ही लगातार पैदल चलने की जगह सिमटती रही है और सड़क हादसों में मरने वाले लोगों की संख्या बढ़ती रही है। सड़क परिवहन मंत्रालय की 2024 की रिपोर्ट बताती है कि सड़क हादसों में इस साल 36,526 पैदल यात्रियों की मौत हुई है। मरने वालों का यह आंकड़ा सड़क दुर्घटना में मरने वाले लोगों की संख्या का 20.26 प्रतिशत है। यही वजह है कि कोर्ट को पैदल चलने वाले लोगों के अधिकार की सुरक्षा के लिये एक कानूनी ढांचा बनाने पर जोर देना पड़ा है। वास्तव में पैदल यात्रियों की रक्षा के लिये कानून तो पहले से ही हैं, मगर ये बिखरे हुए हैं। यदि एक व्यापक कानून बनता है तो फुटपाथ के डिजाइन, यात्रियों की पहुँच, फुटपाथों के रखरखाव और जवाबदेही के लिये मानकों का निर्धारण संभव हो सकेगा। इस संकट के समाधान के लिये नगर निकायों को अतिक्रमण-रोधी नियमों को सख्ती से लागू करना सुनिश्चित करना चाहिए। वास्तव में तभी कोई शहर सचमुच आधुनिक बनता है, जब वह ज्यादा कारों को जगह देने के बजाय हर आम नागरिक को सुरक्षित और सम्मान के साथ चलने की सुविधा प्रदान करता है। बहरहाल, सुप्रीम कोर्ट ने रास्ता दिखा दिया है, अब सरकारों का काम उस पर चलना है।

अभियान

सात पहाड़ियों के स्वामी का अद्भुत दरबार: तिरुपति बालाजी के वे रहस्य जिन पर सदियों से कायम है आस्था का अटूट विश्वास

भारत को मंदिरों की भूमि कहा जाता है। यहां हर प्रदेश, हर नगर और हर गांव में ऐसे पवित्र स्थल मौजूद हैं, जो केवल धार्मिक आस्था के केंद्र नहीं बल्कि संस्कृति, इतिहास और आध्यात्मिक चेतना के जीवंत प्रतीक हैं। इन अग्नितन तैर्थस्थलों के बीच एक ऐसा मंदिर भी है, जिसकी महिमा केवल भारत तक सीमित नहीं है, बल्कि पूरी दुनिया में फैली हुई है। यह मंदिर है तिरुमला की पवित्र पर्वतमालाओं पर स्थित तिरुपति बालाजी धाम। भगवान वेंकटेश्वर स्वामी को समर्पित यह मंदिर करोड़ों श्रद्धालुओं के लिए कलियुग में भगवान विष्णु का प्रत्यक्ष निवास माना जाता है। आंध्र प्रदेश के चित्तूर जिले में स्थित यह मंदिर वर्षभर श्रद्धालुओं से भरा रहता है। हर दिन हजारों और विशेष पर्वों पर लाखों लोग भगवान के दर्शन के लिए लंबी प्रतीक्षा करते हैं। कोई अपनी मनोकामना लेकर आता है, कोई धन्यवाद देने आता है, तो कोई केवल उस दिव्य ऊर्जा को महसूस करने के लिए यहां पहुंचता है जिसके बारे में उसने वर्षों से सुना होता है। लेकिन तिरुपति बालाजी मंदिर की प्रसिद्धि केवल इसकी धार्मिक महत्ता तक सीमित नहीं है। इसके साथ जुड़े अनेक रहस्य, मान्यताएं और चमत्कार इसे दुनिया के सबसे रहस्यमय मंदिरों में भी शामिल करते हैं।

पौराणिक कथाओं के अनुसार भगवान विष्णु ने कलियुग में मानवता के उद्धार के लिए वेंकटेश्वर स्वरूप धारण किया और तिरुमला पर्वत पर निवास किया। कहा जाता है कि जब भगवान ने

देवी पद्मावती से विवाह करने का निर्णय लिया, तब उन्होंने धन के देवता कुबेर से ऋण लिया था। यह ऋण इतना विशाल था कि भगवान ने स्वयं वचन दिया कि कलियुग समाप्त होने तक वे इसे चुकाते रहेंगे। इसी कथा के कारण तिरुपति मंदिर में दान का विशेष महत्व माना जाता है। हर वर्ष यहां अरबों रुपये मूल्य का दान एकत्र होता है। लेकिन इस मंदिर की सबसे अनोखी परंपरा धन नहीं, बल्कि बालों का दान है। दुनिया भर से आने वाले लाखों श्रद्धालु अपने सिर के बाल भगवान को अर्पित करते हैं। यह परंपरा केवल एक धार्मिक अनुष्ठान नहीं बल्कि पूर्ण समर्पण का प्रतीक मानी जाती है। माना जाता है कि जब व्यक्ति अपने बाल भगवान को समर्पित करता है, तो वह अपने अहंकार, अभिमान और बाहरी आकर्षण को भी त्याग देता है। यही कारण है कि बाल दान को आत्मसमर्पण का सर्वोच्च रूप माना जाता है।

तिरुपति बालाजी मंदिर की मुख्य प्रतिमा स्वयं में आश्चर्य का विषय है। भगवान वेंकटेश्वर की यह दिव्य मूर्ति लांगान आठ फीट ऊंची है और अपने भव्य स्वरूप के कारण श्रद्धालुओं को मंत्रमुग्ध कर देती है। अनेक भक्तों का दावा है कि प्रतिमा के समीप खड़े होने पर उन्हें ऐसा अनुभव होता है जैसे भगवान सजीव रूप में वहां उपस्थित हों। मंदिर के पुजारियों का भी मानना ​​है कि यह केवल पत्थर की मूर्ति नहीं बल्कि दिव्य चेतना का केंद्र है।

मूर्ति से जुड़ा सबसे चर्चित रहस्य उसके पीछे

से आने वाली ध्वनि को लेकर है। वर्षों से यह मान्यता प्रचलित है कि प्रतिमा के पीछे कान लगाने पर समुद्र की लहरों जैसी आवाज सुनाई देती है। यह तथ्य लोगों को इसलिए और अधिक आश्चर्यचकित करता है क्योंकि समुद्र मंदिर से कम्भी दूर स्थित है। भक्त इसे क्षीरसागर से भगवान के दिव्य संबंध का संकेत मानते हैं। उनके अनुसार भगवान विष्णु जहां भी विजयमान होते हैं, वहां क्षीरसागर की ऊर्जा विद्यमान रहती है। भगवान वेंकटेश्वर की प्रतिमा पर लगे केश भी श्रद्धालुओं के बीच विषय चर्चा का विषय रहते हैं। मान्यता है कि ये बाल वास्तविक हैं और सदियों बीत जाने के बावजूद इनमें कोई परिवर्तन नहीं आया है। न वे सफेद होते हैं, न उनकी चमक कम होती है और न ही वे उलझते हैं। एक लोकप्रिय कथा के अनुसार भगवान के सिर पर कम्भी चोट लग गई थी, जिसके कारण उनके कुछ बाल झड़ गए थे। तब एक दिव्य कन्या ने अपने बाल भगवान को अर्पित कर दिए। उसकी भक्ति से प्रसन्न होकर भगवान ने उसे आशीर्वाद दिया कि जो भी भक्त अपने बाल उन्हें अर्पित करेंग, उसकी श्रद्धा स्वीकार की जाएगी और उसकी मनोकामना पूरी होगी।

मंदिर से जुड़ा एक और रहस्य भगवान की प्रतिमा पर दिखाई देने वाली नमी को लेकर है। कहा जाता है कि प्रतिमा पर हमेशा हल्की नमी बनी रहती है। गर्मियों के दिनों में यह नमी और अधिक स्पष्ट दिखाई देती है। मंदिर के संवक समय-समय पर प्रतिमा को साफ करते हैं, लेकिन

कुछ समय बाद फिर वही स्थिति दिखाई देती है। श्रद्धालु इसे भगवान की जीवंत उपस्थिति का संकेत मानते हैं। उनके लिए यह केवल एक रहस्य नहीं बल्कि ईश्वर के साक्षात अस्तित्व का अनुभव है। तिरुपति बालाजी मंदिर की धार्मिक परंपराएं भी अत्यंत अनूठी हैं। यहां भगवान को दही-चावल का भोग अर्पित किया जाता है। यह भोग दक्षिण भारतीय संस्कृति में सादगी, संतोष और पवित्रता का प्रतीक माना जाता है। श्रद्धालुओं का विश्वास है कि भगवान को सरलता प्रिय है और यही कारण है कि उन्हें यह भोग विषय रूप से अर्पित किया जाता है। यह परंपरा इस बात का भी संदेश देती है कि ईश्वर को वाहरी वैभव से अधिक सच्ची भक्ति प्रिय होती है।

मंदिर में बन्ने वाला प्रसिद्ध तिरुपति लड्डू भी विश्वभर में अपनी पहचान रखता है। लाखों श्रद्धालु इसे प्रसाद के रूप में प्राप्त करने के लिए उत्सुक रहते हैं। यह केवल मिठाई नहीं बल्कि भगवान का आशीर्वाद माना जाता है। वर्षों से एक ही परंपरा और विधि से तैयार किया जाने वाला यह प्रसाद मंदिर की पहचान बन चुका है। मंदिर परिसर में स्थित अखंड दीपक भी श्रद्धालुओं के लिए आस्था का विशेष केंद्र है। धार्मिक मान्यताओं के अनुसार यह दीपक अनादि काल से जल रहा है। कहा जाता है कि इसकी ज्योति कभी बुझी नहीं। भक्त इसे ईश्वर की अनंत ऊर्जा और सनातन धर्म की निरंतरता का प्रतीक मानते हैं। जब श्रद्धालु इस दीपक के दर्शन

करते हैं, तो उन्हें यह एहसास होता है कि ईश्वर का प्रकाश कभी समाप्त नहीं होता, चाहे समय कितना भी बदल जाए। तिरुपति बालाजी मंदिर के मुख्य प्रवेश द्वार के पास रखी एक प्राचीन छड़ी भी अनेक मान्यताओं से जुड़ी हुई है। लोककथाओं के अनुसार बाल रूप में भगवान वेंकटेश्वर को इसी छड़ी से चोट लगी थी। उस चोट का निशान उनकी ठोड़ी पर पड़ा था। तभी से भगवान की ठोड़ी पर प्रतिदिन चंदन का लेप लगाया जाता है। यह परंपरा आज भी उसी श्रद्धा और विश्वास के साथ निभाई जाती है। तिरुमला की सात पहाड़ियां भी अपने भीतर गहरी आध्यात्मिक महत्ता रखती हैं। इन्हें आदिशेष के सात फनों का स्वरूप माना जाता है। कहा जाता है कि भगवान विष्णु के विश्राम के लिए स्वयं आदिशेष ने इन पर्वतों का रूप धारण किया था। यही कारण है कि इन पहाड़ियों पर चलना भी एक आध्यात्मिक यात्रा माना जाता है। अनेक श्रद्धालु कठिन चढ़ाई के बावजूद पैदल यात्रा करते हैं क्योंकि उनका विश्वास है कि प्रत्येक कदम उन्हें भगवान के और निकट ले जाता है। मंदिर का वातावरण भी अपने आप में विशेष है। घंटियों की मधुर ध्वनि, वैदिक मंत्रों का उच्चारण, भक्तों की प्रार्थनाएं और भगवान के दर्शन की प्रतीक्षा में खड़े लाखों श्रद्धालुओं का उत्साह एक ऐसा आध्यात्मिक वातावरण निर्मित करता है जिसे शब्दों में व्यक्त करना कठिन है। यहां पहुंचने वाला प्रत्येक व्यक्ति अपने भीतर एक अलग प्रकार की शांति और ऊर्जा का

अनुभव करता है। तिरुपति बालाजी मंदिर केवल धार्मिक आस्था का केंद्र नहीं बल्कि भारतीय सभ्यता की जीवंत धरोहर भी है। इसके शिलालेख, स्थापत्य कला, परंपराएं और पौराणिक कथाएं हजारों वर्षों की सांस्कृतिक यात्रा का प्रमाण हैं। वराह पुराण, स्कंद पुराण और अनेक अन्य ग्रंथों में इस पवित्र स्थल का विस्तार से वर्णन मिलता है। यही कारण है कि यह मंदिर केवल एक तैर्थस्थल नहीं बल्कि भारतीय आध्यात्मिक विरासत का गौरव भी माना जात है। आधुनिक विज्ञान ने भले ही अनेक रहस्यों से पर्दा उठा दिया है, लेकिन कुछ स्थान ऐसे होते हैं जहां आस्था का संसार विज्ञान की सीमाओं से कहीं आगे दिखाई देता है। तिरुपति बालाजी मंदिर उन्ही स्थानों में से एक है। यहां के रहस्य, मान्यताएं और परंपराएं श्रद्धालुओं के लिए केवल कहानियां नहीं बल्कि उनकी जीवंत आस्था का हिस्सा हैं। शायद यही कारण है कि सदियों बीत जाने के बाद भी तिरुपति बालाजी मंदिर की महिमा कम नहीं हुई, बल्कि समय के साथ और अधिक बढ़ती गई। करोड़ों लोगों के लिए यह केवल एक मंदिर नहीं बल्कि आशा का केंद्र, विश्वास का आधार और भगवान के साक्षात दर्शन का माध्यम है। तिरुमला की सात पहाड़ियों पर विराजमान भगवान वेंकटेश्वर आज भी अपने भक्तों को उसी करुणा, प्रेम और आशीर्वाद से आलोकित कर रहे हैं, जिसने उन्हें कलियुग का सबसे पूजनीय और चमत्कारी देवस्थान बना दिया है।

“जीवन की असली सम्पदा इंसान के अंदर कस्तूरी मृग की भांति छिपी पड़ी है। भ्रम की मरीचिका के कारण वह इसे बाहर ढूंढ़ता फिर रहा है। वासना, तृष्णा और अहंता के नागपाश में बंधकर वह जीवन की सुख-संतुष्टि की तलाश बाहर खोजने के लिए प्रेरित हो रहा है।

प्रेरणा



शिव और शक्ति का दिव्य संतुलन

सृष्टि के आरंभ से ही एक प्रश्न मनुष्य के मन में उठता रहा है कि इस ब्रह्मांड को संचालित करने वाली वास्तविक शक्ति क्या है। क्या केवल बल ही पर्याप्त है, या फिर बल के साथ संतुलन और संवेदनशीलता का होना भी आवश्यक है? भारतीय दर्शन और सनातन संस्कृति इस प्रश्न का उत्तर भगवान शिव और माता पार्वती के दिव्य संबंध के माध्यम से देती हैं। यह केवल पति-पत्नी का संबंध नहीं है, बल्कि शक्ति और संतुलन, ऊर्जा और दिशा, विनाश और सृजन के अद्भुत समन्वय का प्रतीक है।

भगवान शिव मुस्कुराए। उनके मुखमंडल पर करुणा और ज्ञान की आभा फैल गई। उन्होंने देवताओं की ओर देखा और कहा, "पहले मेरे एक प्रश्न का उत्तर दो। दीपक अकेला क्या करता है?" देवताओं ने तुरंत उत्तर दिया, "प्रभु, दीपक अकेला जलता है।"

शिव ने दूसरा प्रश्न किया, "और तेल अकेला क्या करता है?" देताओं ने कहा, "वह तो केवल पड़ा रहता है, उसका कोई विशेष उपयोग नहीं होता।" शिव ने मुस्कुराते हुए कहा, "लेकिन जब दीपक और तेल एक साथ मिल जाते हैं तो क्या होता है?"

देवता मौन हो गए। उनके पास उत्तर था, लेकिन वे समझ गए थे कि महादेव उन्हें किसी गहरे सत्य की ओर ले जा रहे हैं। तब शिव बोले, "जब दीपक और तेल मिलते हैं तो उमलाना होता है। केवल दीपक हो तो वह कुछ समय बाद बुझ जाएगा। केवल तेल हो तो वह निष्क्रिय रहेगा। लेकिन जब दोनों एक हो जाते हैं, तब प्रकाश जन्म लेता है, जो अंधकार को दूर करता है। यही जीवन का नियम है। यही सृष्टि का आधार है।"

महादेव ने आगे कहा, "मैं वह अग्नि हूं जो सब कुछ भस्म कर सकती है। मेरे भीतर असौम्य शक्ति है, अपार सामर्थ्य है। लेकिन शक्ति यदि दिशा के बिना हो, तो वह केवल विनाश का कारण बन सकती है। माता पार्वती वह शक्ति हैं जो मेरी ऊर्जा को उद्देश्य देती हैं, उसे संतुलित करती हैं और उसे सृजन के मार्ग पर ले जाती हैं।" देवता मंत्रमुग्ध होकर सुनते रहे। शिव ने कहा, "पार्वती के बिना मैं अधूरा हूं। मैं शक्ति का स्रोत हूं, लेकिन संतुलन के बिना। और मेरे बिना पार्वती भी अधूरी है। वे शक्ति हैं, लेकिन दिशा के बिना। जब हम दोनों एक होते हैं, तभी सृष्टि का संचालन संभव होता है। तभी जीवन में सामंजस्य आता है। तभी ब्रह्मांड अपनी गति बनाए रखता है।"

यही कारण है कि भगवान शिव को अर्धनारीश्वर कहा जाता है। अर्धनारीश्वर केवल एक मूर्ति या प्रतीक नहीं है। यह एक महान दर्शन है, जो हमें बताता है कि संसार में किसी भी शक्ति का पूर्ण होना संभव नहीं जब तक उसके साथ संतुलन

और संवेदनशीलता न जुड़ी हो। अर्धनारीश्वर के स्वरूप में भगवान शिव का आधा भाग पुरुष का और आधा भाग स्त्री का है। यह हमें सिखाता है कि पुरुष और स्त्री प्रतिस्पर्धी नहीं, बल्कि पूरक हैं। दोनों एक-दूसरे के विरोधी नहीं, बल्कि एक-दूसरे की पूर्णता हैं। जहां केवल कठोरता होगी, वहां जीवन सूख जाएगा। जहां केवल कोमलता होगी, वहां चुनौतियों का सामना कठिन होगा। लेकिन जब दोनों का संतुलन बनेगा, तभी जीवन सुंदर और सार्थक बनेगा। शिव तांडव के प्रतीक हैं। उनका स्वरूप हमें साहस, निर्भीकता और परिवर्तन का संदेश देता है। वे अन्याय और अधर्म के विनाशक हैं। वहां माता पार्वती प्रेम, करुणा, धैर्य और सृजन की प्रतीक हैं। वे जीवन को पोषित करती हैं, संबंधों को जोड़ती हैं और संसार को मातृत्व का स्पर्श देती हैं। यदि केवल तांडव हो तो सृष्टि टिक नहीं सकती और यदि केवल प्रेम हो तो अन्याय का अंत नहीं हो सकता। इसलिए दोनों का साथ आवश्यक है।

यह शिक्षा केवल देवताओं के लिए नहीं थी। यह समस्त मानवता के लिए थी। आज के समय में भी यह सत्य उतना ही प्रासंगिक है जितना हजारों वर्ष पहले था। मनुष्य अपने जीवन में अक्सर केवल शक्ति प्राप्त करने का प्रयास करता है। वह धन, पद, प्रतिष्ठा और प्रभाव के पीछे दौड़ता है। लेकिन यदि उसके पास संतुलन, विवेक और संवेदनशीलता नहीं है, तो वह शक्ति अंततः उसके लिए और समाज के लिए संकट का कारण बन सकती है। इसी प्रकार केवल भावुकता और करुणा भी पर्याप्त नहीं। यदि उनमें साहस और निर्णय लेने की क्षमता

न हो, तो जीवन की कठिनाइयों का सामना करना संभव नहीं होता। इसलिए जीवन में शिव और शक्ति दोनों का होना आवश्यक है। हमें अपने भीतर की शक्ति को जागृत करना चाहिए, लेकिन साथ ही उसे संतुलन और प्रेम की दिशा भी देनी चाहिए।

भगवान शिव का यह संदेश हमें परिवार, समाज और राष्ट्र के स्तर पर भी मार्गदर्शन देता है। जहां केवल अधिकार होंगे और कर्तव्य नहीं, वहां असंतुलन पैदा होगा। जहां केवल नियम होंगे और करुणा नहीं, वहां कठोरता बढ़ेगी। जहां केवल भावनाएं होंगी और विवेक नहीं, वहां भ्रम उत्पन्न होगा। लेकिन जब शक्ति और संतुलन साथ होंगे, तब समृद्धि और शांति का मार्ग खुलेगा। देवताओं की आंखें तम हो गईं। वे समझ चुके थे कि शिव और पार्वती का मिलन केवल एक वैवाहिक संबंध नहीं, बल्कि सृष्टि के संतुलन का आधार है। उन्होंने महादेव को प्रणाम किया और उनके ज्ञान के प्रति कृतज्ञता व्यक्त की। उस दिन देवताओं ने जाना कि पूर्णता अकेलेपन में नहीं, बल्कि समन्वय में है। प्रकाश केवल दीपक से नहीं आता, बल्कि तेल से भी नहीं आता। प्रकाश केवल शक्ति प्राप्त करने का प्रयास करता है। जब दोनों मिलते हैं। उसी प्रकार जीवन की वास्तविक शक्ति भी तब प्रकट होती है जब सामर्थ्य और संवेदनशीलता, साहस और प्रेम, पुरुष और प्रकृति, शिव और शक्ति एक साथ होते हैं। यही अर्धनारीश्वर का शाश्वत संदेश है। यही जीवन का गूढ़ रहस्य है। और यही वह दिव्य संतुलन है जो केवल व्यक्ति को ही नहीं, बल्कि पूरे ब्रह्मांड को स्थिर और गतिशील बनाए रखता है।

बनाता और पास के शहर में जाकर बेच आता। जब एक दिन राजा जंगल में वहां से गुजरता है तो आश्चर्यचकित होता है कि लकड़हारा उसी झोपड़ी में रह रहा है, जबकि उसे उम्मीद थी कि वह अब तक सम्पन्न हो गया होगा। अब वहां कुछ पेड़ बचे थे। राजा ने पूरा हाल-चाल पूछा तो माथा ठोक कर रह गया। और लकड़हारे को समझाया कि यह चंदन का पेड़ है, जिसका एक पेड़ भी इसकी दरिद्रता को दूर करने के लिए पर्याप्त था। लकड़हारा अपनी मूर्खता पर पछताता है और बचे वृक्षों का सदुपयोग करते हुए शेष जीवन को सम्पन्नता एवं धन्यता के साथ गुजारता है। यही कहानी हर इंसान की है, जिसे ईश्वर ने वे सारी क्षमताएं, विभूतियां बीज रूप में प्रदान की हैं —एक स्वस्थ-सबल काया, कम्प्यूटर से भी तेज चलने वाला मस्तिष्क, वायु से भी तीव्र मन, किसी भी समस्या को भेदने में सक्षम बुद्धि, प्रेरणा की अजस्र स्रोत भावनाएं, अस्तित्व के हर रहस्य को भेदने में सक्षम अंतर्प्रेज्ञा, किसी भी कल्पना को मूर्त करने में सक्षम इच्छाशक्ति। और साथ में समय के रूप में सबको चौबीस घंटे, जिनका सदुपयोग करते हुए वह अपनी मनचाही सृष्टि का सृजन कर सकता है। और अपने देवत्व, ईश्वरत्व को चेतन्य करते हुए इस जीवन को धन्य एवं सफल सार्थक कर सकता है। देर इनके प्रति जानने के लिए, नित्य अपने अंतर् मन में झांकने की है, आत्मनिरीक्षण करते हुए इसमें बाधक आंतरिक एवं बाह्य तत्वों को पहचान कर दूर करने भर की है। नित्य स्वाध्याय सतसंग एवं आत्मचिंतन-मनन के प्रकाश में प्राप्त अंतर्दृष्टि के आधार पर वह इसे सहजता से अर्जित कर सकता है।

अपना बोया ही काट रही ममता बनर्जी

पश्चिम बंगाल विधानसभा चुनावों में सत्तासीन तृणमूल कांग्रेस को मिली ऐतिहासिक पराजय के बाद, जिस तरह पार्टी के विधायक और सांसद ममता बनर्जी से नाता तोड़ रहे हैं, उसने कई लोगों को हैरान किया है। लेकिन ममता बनर्जी पिछले 28-29 सालों से जिस तरह की सिद्धान्तहीन राजनीति करती रही हैं, उसे देखते हुए इन जन-प्रतिनिधियों के कारनामों कुछ भी असामान्य नहीं लगते। वे बस वही कर रहे हैं जो ममता दीदी ने उन्हें सिखाया है। असल में, अच्छा शिष्य नहीं, है जो अपने गुरु के दिखाए रास्ते पर चले। ये सांसद और विधायक भी वही कर रहे हैं जो ममता बनर्जी करती रही हैं, यानी बिना

अगले विधानसभा चुनाव में अभी पांच किसी सिद्धांत या आदर्शवादी राजनीति। किसी को सीढ़ी की तरह इस्तेमाल करना से नहीं आता, बल्कि समन्वय में है। प्रकाश केवल दीपक से नहीं आता, बल्कि तेल से भी नहीं आता। प्रकाश केवल शक्ति प्राप्त करने का प्रयास करता है। जब दोनों मिलते हैं। उसी प्रकार जीवन की वास्तविक शक्ति भी तब प्रकट होती है जब सामर्थ्य और संवेदनशीलता, साहस और प्रेम, पुरुष और प्रकृति, शिव और शक्ति एक साथ होते हैं। यही अर्धनारीश्वर का शाश्वत संदेश है। यही जीवन का गूढ़ रहस्य है। और यही वह दिव्य संतुलन है जो केवल व्यक्ति को ही नहीं, बल्कि पूरे ब्रह्मांड को स्थिर और गतिशील बनाए रखता है।

1998 को कांग्रेस से अलग होकर तृणमूल कांग्रेस का गठन किया था। उस समय ममता बनर्जी को कांग्रेस से यह शिकायत थी कि राज्य में लेफ्ट फ्रंट को हराने के लिए कांग्रेस भाजपा के साथ हाथ क्यों नहीं मिला रही है? उस समय ममता भाजपा को सांप्रदायिक नहीं मानती थीं। उन्होंने यह भी कहा था कि भाजपा कोई सांप्रदायिक पार्टी नहीं है। तो, अगर अब तृणमूल कांग्रेस के सांसद और विधायक कह रहे हैं कि भाजपा सांप्रदायिक पार्टी नहीं है, तो इसमें क्या गलत है? वे बस अपनी प्रिय नेता के पदचिह्नों पर चल रहे हैं।

बिहार के पूर्व मुख्यमंत्री नीतीश कुमार ने चार बार (2013, 2017, 2022 और 2024 में) अपना पक्ष बदला, लेकिन ममता बनर्जी अब तक पांच बार अपना पक्ष बदल चुकी हैं। इतिहास के पन्ने पलटें तो, बात 1997 की है, केंद्र में संयुक्त मोर्चा की सरकार थी। संयुक्त मोर्चा सरकार को बाहर से समर्थन दे रही कांग्रेस ने अपना समर्थन वापस ले लिया, नतीजतन नवंबर 1997 में सरकार गिर गई और 1998 में नए सिरे से लोकसभा चुनाव हुए। तब तक ममता कांग्रेस छोड़कर एक नई पार्टी बना चुकी थीं। चुनावों में ममता की तृणमूल कांग्रेस ने भाजपा के साथ सीट का समझौता किया और सात सीटें जीतीं। हालांकि, वह सरकार में शामिल नहीं हुई क्योंकि उन्होंने राज्य में अपनी नई बनी पार्टी को मजबूत करने पर ध्यान दिया। 13 महीने बाद केंद्र सरकार गिर गई।

राज्य स्वागत कार्यक्रम : जून-2026

मुख्यमंत्री के आवेदकों की रुबरु अथवा लिखित प्रस्तुतियों को गंभीरतापूर्वक ध्यान में लेकर उनका निराकरण करने के निर्देश

मुख्यमंत्री श्री भूपेंद्र पटेल
► कलेक्टर को शिकायत निवारण के लिए अग्रणी भूमिका निभाने के निर्देश
► दो से तीन विभागों से जुड़ी समस्याओं के निराकरण की जिम्मेदारी मुख्य सरकारी विभाग की होगी

► **जिला स्तर के अधिकारियों को आवेदनों का पूरा अध्ययन कर जिला स्तर पर ही निर्णय करने के मुख्यमंत्री के स्पष्ट दिशा-निर्देश**
► **पुनर्वास के अंतर्गत प्राप्त होने योग्य भूमि, गौचर भूमि पर हुए अतिक्रमण तथा री-सर्वे संबंधी समस्याओं का तात्कालिक निराकरण लाने के निर्देश**
► **राज्य के जिला और तहसील स्वागत कार्यक्रम में कुल 5,200 आवेदकों की प्रस्तुतियों को संबंधित विभागों को आवश्यक कार्रवाई के लिए भेजा गया**

गुजरात एसटी बना डिजिटल

क्यूआर कोड पेमेंट सिस्टम के जरिए गत एक वर्ष में जीएसआरटीसी की बसों में 1.03 करोड़ रुपए से अधिक का ट्रांजेक्शन दर्ज हुआ

► **निगम की ओर से संचालित 16 विभाग के 125 डिपो को 10,500 नई ईटीएम मशीन आवंटित की गई**
► **अब 100 किमी से अधिक दूरी तय करने वाली जीएसआरटीसी की लगभग 2500 लोकल ट्रिप्स में भी ऑनलाइन आरक्षण की सुविधा होगी**

गांधीनगर : गुजरात राज्य सड़क परिवहन निगम (जीएसआरटीसी) ने 'डिजिटल इंडिया' और 'डिजिटल गुजरात' के संकल्प को साकार करते हुए यात्री सुविधा, पारदर्शिता और गुणवत्तापूर्ण परिवहन के क्षेत्र में एक नया कीर्तिमान स्थापित किया है। उप मुख्यमंत्री श्री हर्ष संघवी के नेतृत्व में निगम ने यात्रियों के सफर को और भी सुगम और आसान बना दिया है। इसके अंतर्गत निगम की बसों में इलेक्ट्रॉनिक टिकटिंग मशीन (ईटीएम) क्यूआर कोड सिस्टम लागू किया गया है। इस सिस्टम के जरिए अप्रैल 2025 से मई 2026 तक बसों में कुल 1.03 करोड़ से अधिक क्यूआर ट्रांजेक्शन दर्ज हुए हैं, जिससे निगम को 112.45 करोड़ रुपए की आय हुई है।

राज्य के बस यात्रियों को कैशलेस यात्रा का उत्कृष्ट अनुभव देने के लिए ईटीएम क्यूआर कोड सिस्टम लागू किया गया है। जहां, अप्रैल 2025 में बसों में 4.60 लाख क्यूआर कोड ट्रांजेक्शन हुए थे, वहीं मई 2026 में चार गुना वृद्धि के साथ 17.34 लाख से अधिक ट्रांजेक्शन दर्ज हुए हैं। इस संदर्भ में निगम को हर महीने 19.37 करोड़ रुपए की आय हो



रही है। निगम के जनसंपर्क अधिकारी (पीआरओ) श्री श्रद्धा भट्ट ने कहा कि निगम की ओर से संचालित 16 विभागों के 125 डिपो को 10,500 नई ई-बीटीएम-मशीन (इलेक्ट्रॉनिक बस टिकटिंग मशीन) आवंटित की गई हैं। पहले प्रीमियम बसों में क्यूआर कोड ट्रांजेक्शन के जरिए टिकट बुकिंग को मिले शानदार समर्थन को देखते हुए, अब निगम के अंतर्गत सभी सर्विसों और सभी डिपो पर इस सुविधा को लागू कर दिया गया है। इस क्यूआर कोड ट्रांजेक्शन पेमेंट की सुविधा से यात्रा

टैरिफ की घड़ी नजदीक, भारत-अमेरिका व्यापार समझौते को अंतिम रूप देने की दौड़ तेज

नई दिल्ली। भारत और अमेरिका के बीच बहुप्रतीक्षित द्विपक्षीय व्यापार समझौते (बीटीए) को लेकर कूटनीतिक और आर्थिक गतिविधियां तेज हो गई हैं। दोनों देशों के बीच कई महीनों से चल रही बातचीत अब निर्णायक चरण में पहुंचती दिखाई दे रही है। अगले महीने समाप्त होने वाली अमेरिकी टैरिफ समयसीमा से पहले समझौते के पहले चरण को अंतिम रूप देने के लिए दोनों पक्ष सक्रिय रूप से प्रयास कर रहे हैं। इस दिशा में अमेरिकी व्यापार प्रतिनिधि और भारतीय वाणिज्य मंत्रालय के वरिष्ठ अधिकारियों के बीच महत्वपूर्ण बैठकों का दौर शुरू होने जा रहा है, जिसे दोनों देशों के

आर्थिक संबंधों के लिए अत्यंत महत्वपूर्ण माना जा रहा है।

सूत्रों के अनुसार अमेरिकी व्यापार प्रतिनिधि जैमीसन ग्रीर नई दिल्ली में केंद्रीय वाणिज्य एवं उद्योग मंत्री पीयूष गोयल के साथ कई दौर की वार्ता करेंगे। इन बैठकों का मुख्य उद्देश्य उन लंबित मुद्दों का समाधान तलाशना है जो अभी तक व्यापार समझौते के रास्ते में बाधा बने हुए हैं। दोनों देशों के अधिकारी इस बात को लेकर आशावादी हैं कि समयसीमा समाप्त होने से पहले किसी शांशा सहमति तक पहुंचा जा सकता है।

भारत में अमेरिकी राजदूत सर्जियो गोर ने

गांधीनगर : मुख्यमंत्री श्री भूपेंद्र पटेल ने जून-2026 के राज्य स्वागत कार्यक्रम में नागरिकों की समस्याओं के त्वरित, पारदर्शी और समयबद्ध निराकरण के लिए संबंधित विभागों और जिला प्रशासन को आवश्यक मार्गदर्शन तथा निर्देश दिए। इस संदर्भ में उन्होंने स्पष्ट रूप से कहा कि जिला स्तर के अधिकारियों को आवेदनों का पूरा अध्ययन कर जिला स्तर पर ही सकारात्मक अथवा नकारात्मक निर्णय लेना चाहिए। यदि समस्या राज्य सरकार के कार्यक्षेत्र का हो तो बिना विलंब प्रस्ताव राज्य सरकार को भेजा जाना चाहिए। मुख्यमंत्री ने कहा कि यह सुनिश्चित हो कि आवेदकों को लंबे समय तक निर्णय की प्रतीक्षा न करनी पड़े।

मुख्यमंत्री ने जून-2026 महीने के राज्य स्तरीय स्वागत ऑनलाइन जन शिकायत निवारण कार्यक्रम में प्रत्यक्ष रूप से अपनी प्रस्तुतियों लेकर आए सामान्य नागरिकों की समस्याओं को संवेदनशीलता के साथ सुना। सामान्यतः हर महीने के चौथे गुरुवार को आयोजित होने वाला राज्य स्वागत कार्यक्रम इस बार 23 से 25 जून तक राज्यभर में आयोजित होने वाले शाला प्रवेशोत्सव के कारण 22 जून सोमवार को आयोजित किया गया।

इस राज्य स्वागत कार्यक्रम में 120 से अधिक आवेदक अपनी प्रस्तुतियों के साथ मुख्यमंत्री कार्यालय के जनसंपर्क इकाई में उपस्थित रहे। जिला स्वागत में 2,228 तथा तहसील स्वागत में 2,854 सहित कुल 5,200 आवेदकों की प्रस्तुतियों को संबंधित विभागों को आवश्यक कार्रवाई के लिए भेजा गया।

मुख्यमंत्री श्री भूपेंद्र पटेल के समक्ष छोटउदेपुर तथा मेहसाणा जिले के किसानों ने पुनर्वास के अंतर्गत प्राप्त होने योग्य भूमि, अर्थिक गतिविधियों के लिए अत्यंत महत्वपूर्ण माना जा रहा है।

शिमला। वैश्विक दवा उद्योग में आने वाले वर्षों में एक बड़ा बदलाव देखने को मिल सकता है और इसका सबसे अधिक लाभ भारत को मिलने की संभावना जताई जा रही है। पूर्व केंद्रीय मंत्री और हिमाचल प्रदेश के पूर्व मुख्यमंत्री शांता कुमार ने दावा किया है कि वर्ष 2027 तक दुनिया भर में लगभग 142 अरब डॉलर मूल्य की अनेक महत्वपूर्ण दवाओं के पेटेंट समाप्त हो जाएंगे। यह स्थिति भारत के दवा उद्योग को निश्चित अवधि के लिए पेटेंट अधिकार प्राप्त होते हैं। इस अवधि के दौरान केवल वही कंपनियाँ उस दवा का निर्माण और बिक्री कर सकती हैं। लेकिन पेटेंट अवधि समाप्त होने के बाद अन्य कंपनियाँ भी उसी दवा का निर्माण करने के लिए पात्र हो जाती हैं। ऐसी दवाओं को जैनेरिक दवाएं कहा जाता है। जैनेरिक दवाएं गुणवत्ता और प्रभावशीलता के मामले में मूल दवाओं के समान मानी जाती हैं, लेकिन प्रतियस्पर्धा बढ़ने के कारण उनकी कीमत काफी कम हो जाती है।

उत्तरे अनुसार प्रस्तावित समझौते का पहला चरण केवल व्यापारिक लाभ तक सीमित नहीं होगा, बल्कि यह भारत और अमेरिका के बीच की वार्ता करेंगे। इन बैठकों का मुख्य उद्देश्य उन लंबित मुद्दों का समाधान तलाशना है जो अभी तक व्यापार समझौते के रास्ते में बाधा बने हुए हैं। दोनों देशों के अधिकारी इस बात को लेकर आशावादी हैं कि समयसीमा समाप्त होने से पहले किसी शांशा सहमति तक पहुंचा जा सकता है।

संकेत दिया है कि दोनों देशों के बीच चल रही बातचीत सकारात्मक दिशा में आगे बढ़ रही है। उनके अनुसार प्रस्तावित समझौते का पहला चरण केवल व्यापारिक लाभ तक सीमित नहीं होगा, बल्कि यह भारत और अमेरिका के बीच की वार्ता करेंगे। इन बैठकों का मुख्य उद्देश्य उन लंबित मुद्दों का समाधान तलाशना है जो अभी तक व्यापार समझौते के रास्ते में बाधा बने हुए हैं। दोनों देशों के अधिकारी इस बात को लेकर आशावादी हैं कि समयसीमा समाप्त होने से पहले किसी शांशा सहमति तक पहुंचा जा सकता है।

भारत में अमेरिकी राजदूत सर्जियो गोर ने संकेत दिया है कि दोनों देशों के बीच चल रही बातचीत सकारात्मक दिशा में आगे बढ़ रही है। उनके अनुसार प्रस्तावित समझौते का पहला चरण केवल व्यापारिक लाभ तक सीमित नहीं होगा, बल्कि यह भारत और अमेरिका के बीच की वार्ता करेंगे। इन बैठकों का मुख्य उद्देश्य उन लंबित मुद्दों का समाधान तलाशना है जो अभी तक व्यापार समझौते के रास्ते में बाधा बने हुए हैं। दोनों देशों के अधिकारी इस बात को लेकर आशावादी हैं कि समयसीमा समाप्त होने से पहले किसी शांशा सहमति तक पहुंचा जा सकता है।

नमो लक्ष्मी योजना के कारण गत एक वर्ष में कक्षाओं में 80 प्रतिशत उपस्थिति देने वाली छात्राओं की संख्या 1,71,988 से बढ़कर 2,96,495 हुई, 73 प्रतिशत की वृद्धि

► **नमो सरस्वती विज्ञान साधना योजना के चलते गत एक वर्ष में विज्ञान की कक्षाओं में 80 से 100 प्रतिशत उपस्थिति देने वाले विद्यार्थियों की संख्या 19,324 से बढ़कर 43,533 हुई, 125 प्रतिशत की वृद्धि**
► **नमो लक्ष्मी योजना अंतर्गत अब तक कुल 1664.06 करोड़ रुपए तथा नमो सरस्वती विज्ञान साधना योजना अंतर्गत 290 करोड़ रुपए की सहायता का भुगतान किया गया**

गांधीनगर : मुख्यमंत्री श्री भूपेंद्र पटेल के नेतृत्व में राज्य में नमो लक्ष्मी योजना लागू होने के बाद उच्चतर माध्यमिक विद्यालयों में उपस्थिति देने वाली कन्याओं की संख्या में उल्लेखनीय वृद्धि देखने को मिली है। विद्या समीक्षा केन्द्र में विद्यार्थियों की ऑनलाइन उपस्थिति की मॉनिटरिंग की जाती है, जिसके अनुसार विद्यालयों में कक्षा 9 से 12 की कक्षाओं (क्लासरूम) में 80 प्रतिशत उपस्थिति देने वाली कन्याओं की संख्या वर्ष 2024-25 में 1,71,988 से बढ़कर वर्ष 2025-26 में 2,96,495 हुई है, अर्थात यह संख्या गत एक वर्ष में 73 प्रतिशत की वृद्धि दर्शाती है।

नमो लक्ष्मी योजना के साथ ही राज्य के विद्यार्थियों को विज्ञान प्रवाह (साइंस स्ट्रीम) में अध्ययन करने के लिए

प्रोत्साहन देने के उद्देश्य से शुरू की गई नमो सरस्वती विज्ञान साधना योजना लागू होने के भी सकारात्मक परिणाम देखने को मिले हैं। विद्या समीक्षा केन्द्र द्वारा दिए गए आँकड़ों के अनुसार इस योजना के कारण विज्ञान की कक्षाओं में 80 से 100 प्रतिशत उपस्थिति देने वाले विद्यार्थियों की संख्या वर्ष 2024-25 में 19,324 से बढ़कर वर्ष 2025-26 में 43,533 हुई है, जो गत एक वर्ष में लगभग 125 प्रतिशत की वृद्धि सुचित करती है।

उल्लेखनीय है कि प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी ने देश के विकास के लिए गुणवत्तायुक्त शिक्षा पर बल दिया है। उन्होंने कहा है, "शिक्षा में देश को सफल बनाने, देश का भाग्य बदलने की क्षमता रही हुई है।' गुजरात के तत्कालीन मुख्यमंत्री के रूप में श्री नरेन्द्र मोदी द्वारा



गौचर भूमि पर हुए अतिक्रमण तथा भूमि री-सर्वे में विसंगतियों संबंधी प्रस्तुतियां रखीं। इस छोटाउदेपुर जिले के एक आवेदक ने प्रस्तुत किया कि सिंचाई योजना के कारण उनकी भूमि डूब क्षेत्र में चली गई, जिसके चलते पुनर्वास के अंतर्गत मिलने योग्य भूमि उन्हें लंबे समय से आवंटित नहीं की गई है। इस संबंध में मुख्यमंत्री श्री भूपेंद्र पटेल ने तत्काल भूमि आवंटित करने के निर्देश देते हुए कहा कि दो जिलों के कलेक्टरों तथा सिंचाई

दुनिया की फार्मैसी बनने की ओर भारत, 142 अरब डॉलर के पेटेंट खत्म होने से खुलेगा अवसरों का विशाल द्वार

शांता कुमार ने कहा कि भारतीय दवा उद्योग ने पिछले वर्षों में अंतरराष्ट्रीय स्तर पर अपनी विश्वसनीयता स्थापित की है। अमेरिका, ब्रिटेन, यूरोप, अफ्रीका और एशिया के अनेक देशों में भारतीय जैनेरिक दवाओं की भारी मांग है। कम लागत पर उच्च गुणवत्ता वाली दवाएं उपलब्ध कराने की क्षमता ने भारत को वैश्विक स्वास्थ्य व्यवस्था का एक महत्वपूर्ण स्तंभ बना दिया है।

उन्होंने अनुमान जताया कि जिन दवाओं के पेटेंट समाप्त होने जा रहे हैं, उनके आधार पर भारत में लगभग 50 अरब डॉलर का नया जैनेरिक दवा बाजार विकसित हो सकता है। यह बाजार न केवल बड़ी दवा कंपनियों के लिए बल्कि मध्यम और छोटे उद्योगों के लिए भी नए अवसर लेकर आएगा। इसके परिणामस्वरूप उत्पादन इकाइयों का विस्तार होगा, नए कारखाने स्थापित होंगे और अनुरोधित एवं विकास गतिविधियों को भी बढ़ावा मिलेगा।

शांता कुमार ने विशेष रूप से हिमाचल प्रदेश का उल्लेख करते हुए कहा कि राज्य पहले से ही देश का एक महत्वपूर्ण फार्मा हब बन चुका है। बड़ी, बरोटीवाला और नालागढ़ जैसे औद्योगिक क्षेत्रों में बड़ी संख्या में दवा निर्माण इकाइयां कार्यरत हैं। यदि उचित नीति और प्रोत्साहन मिले तो हिमाचल प्रदेश की फार्मा कंपनियां इस वैश्विक अवसर का भरपूर लाभ उठा सकती हैं। इससे राज्य में निवेश बढ़ेगा और स्थानीय युवाओं के लिए रोजगार के नए अवसर पैदा होंगे।

उन्होंने केंद्र सरकार से आग्रह किया कि इस विषय पर उच्चस्तरीय विशेषज्ञ समिति का गठन किया जाए, जो पेटेंट समाप्त होने वाली दवाओं का विस्तृत अध्ययन करे और भारत की संभावनाओं का आकलन करते हुए दीर्घकालिक रणनीति तैयार करे। उनका मानना ​​है कि केवल उद्योग जगत पर छोड़ देने के बजाय सरकार को भी सक्रिय भूमिका निभानी चाहिए ताकि भारत होने के बाद वैश्विक बाजार में जैनेरिक दवाओं की मांग तेजी से बढ़ती है। यही कारण है कि दुनिया की कई बड़ी फार्मा कंपनियां पेटेंट समाप्त होने वाली दवाओं पर पहले से नजर रखती हैं और उत्पादन की तैयारियां शुरू कर देती हैं। भारत इस दोहन में पहले से ही मजबूत स्थिति में है और क्षेत्र में जैनेरिक दवाओं का निर्माण करता है। इसी क्षमता के कारण भारत को लंबे समय से "दुनिया की फार्मैसी" कहा जाता रहा है।

विद्यार्थियों की संख्या वर्ष 2024-25 में 2,40,556 से बढ़कर वर्ष 2025-26 में 2,55,804 (लगभग 6.34 प्रतिशत की वृद्धि) हुई है। विशेष रूप से कक्षा 12 में प्रवेश लेने वाले विद्यार्थियों की संख्या में 11.04 प्रतिशत में उल्लेखनीय वृद्धि देखने को मिली है। यह बात गुजरात के युवावन को विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी (साइंस एंड टेक्नोलॉजी) के प्रति बढ़ रही रुचि तथा उत्साह को दर्शाती है। इसके अतिरिक्त, नमो सरस्वती विज्ञान साधना योजना अंतर्गत अब तक लाभार्थियों को कुल 290 करोड़ रुपए की सहायता का भुगतान किया गया है।

इन दोनों योजनाओं का उद्देश्य राज्य में शिक्षा के स्तर को अधिक ऊँचा ले जाना है। नमो लक्ष्मी योजना सुनिश्चित करती है कि अधिक से अधिक बेटियाँ अपनी सम्पूर्ण स्कूली शिक्षा पूर्ण करें और साथ ही उनके मानसिक तथा शारीरिक विकास में किसी भी प्रकार की कमी न रहे, जबकि नमो सरस्वती विज्ञान साधना योजना विद्यार्थियों को विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी के क्षेत्र में करियर बनाने के लिए सहायक सिद्ध हो रही है। राज्य के विद्यार्थी उच्च गुणवत्तायुक्त शिक्षा प्राप्त कर आत्मनिर्भर भारत के निर्माण में अपना योगदान दें तथा विकासित गुजरात से विकसित भारत@2047 का प्रधानमंत्री का विजन साकार हो; इसके लिए गुजरात सरकार प्रयासरत है।

विभाग के बीच समन्वय के अभाव में आवेदकों को बार-बार भटकना पड़े, यह उचित नहीं है। मुख्यमंत्री ने सिंचाई विभाग की मुख्य जिम्मेदारी निर्धारित करते हुए 30 दिनों के भीतर वैकल्पिक भूमि आवंटित करने के निर्देश दिए।

मेहसाणा जिले के एक आवेदक ने री-सर्वे के कारण भूमि के क्षेत्रफल में कमी आने की प्रस्तुति दी। इस पर मुख्यमंत्री ने तत्काल माप करवाकर क्षेत्रफल की त्रुटि सुधारने की कार्रवाई 15 दिनों में पूर्ण करने के लिए जिला कलेक्टर को निर्देश दिए तथा भूमि मापन और री-सर्वे क्षेत्रफल सुधार संबंधी मामलों में आईएलआर कार्यालय को जिम्मेदारीपूर्वक कार्य कर किसानों की समस्याओं का

मुख्यमंत्री श्री भूपेंद्र पटेल का पूर्व अग्निवारों के लिए महत्वपूर्ण निर्णय

► **राज्य पुलिस बल के सशस्त्र विभाग, एसआरपी, जेल विभाग तथा वन विभाग के तृतीय श्रेणी संवर्ग के वनरक्षक और वनपाल जैसे पदों की सीधी भर्ती में 20 फीसदी आरक्षण का लाभ मिलेगा**
► **शारीरिक क्षमता परीक्षा से मुक्ति तथा निर्धारित ऊपरी आयु सीमा में छूट**



गांधीनगर : मुख्यमंत्री श्री भूपेंद्र पटेल ने पूर्व अग्निवीरों को राज्य सरकार के विभिन्न विभागों में तृतीय श्रेणी संवर्ग की

सीधी भर्ती में 20 फीसदी आरक्षण देने का महत्वपूर्ण निर्णय किया है।

इतना ही नहीं, मुख्यमंत्री ने पूर्व अग्निवारों

शाला प्रवेशोत्सव-कन्या केळवणी रथयात्रा के 24वें संस्करण का मंगलवार से प्रारंभ

► **मुख्यमंत्री श्री भूपेंद्र पटेल वडनगर के उसी बी.एन. हाईस्कूल से राज्यव्यापी शाला प्रवेशोत्सव का नेतृत्व करेंगे, जहां से शाला प्रवेशोत्सव के प्रणेता, प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी ने अपनी स्कूली शिक्षा प्राप्त की थी**
► **तीन दिवसीय प्रवेशोत्सव के दौरान पूरे राज्य में 38,400 स्कूलों में 28.58 लाख बच्चों को प्रवेश दिया जाएगा**
► **स्कूल प्रबंधन समिति, अभिभावकों और ग्रामीणों की सहभागिता से मनाया जाएगा शाला प्रवेशोत्सव**

गांधीनगर : प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी द्वारा गुजरात के मुख्यमंत्री के रूप में अपने कार्यकाल के दौरान शुरू किए गए कन्या केळवणी-शाला प्रवेशोत्सव का 24वां संस्करण मुख्यमंत्री श्री भूपेंद्र पटेल के मार्गदर्शन में मंगलवार, 23 जून से गुरुवार, 25 जून तक आयोजित होगा।

मुख्यमंत्री श्री भूपेंद्र पटेल इस 24वें राज्यव्यापी शाला प्रवेशोत्सव के प्रणेता, प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी ने अपनी स्कूली शिक्षा प्राप्त की थी। मुख्यमंत्री वडनगर में आंगनवाड़ी में दो शिशुओं सहित बाल वाटिका से कक्षा 11 तक के 389 विद्यार्थियों का स्कूल में दाखिला कराएंगे।

2003 से शुरू हुए शिक्षा सेवायज्ञ को सतत यात्रा के इस 24वें वर्ष में तीन दिवसीय शाला प्रवेशोत्सव के अंतर्गत राज्यभर के 38,400 स्कूलों में कुल लगभग 28 लाख 58 हजार बच्चों को स्कूल में प्रवेश दिया जाएगा। तदनुसार, 1 जून को जिन बच्चों की उम्र पांच वर्ष से अधिक और 6 वर्ष से कम

होगा, उन्हें बाल वाटिका में, जबकि 1 जून को जिन बच्चों की उम्र छह वर्ष से अधिक और सात वर्ष से कम होगी, उन्हें कक्षा-1 में प्रवेश दिया जाएगा। इसके अलावा, कक्षा-8 उत्तीर्ण करने वाले बच्चों को कक्षा-9 में और कक्षा-10 उत्तीर्ण करने वाले बच्चों को कक्षा-11 में प्रवेश दिया जाएगा।

मुख्यमंत्री और उप मुख्यमंत्री सहित मंत्रिमंडल के सदस्य, आईएएस, आईपीएस और आईएफएस स्तर के अधिकारी और सचिवालय के अधिकारियों सहित सहित 465 महानुभाव प्रवेशोत्सव कार्यक्रम में सहभागी होकर स्कूल-स्कूल जाकर बच्चों को प्रवेश दिलाने के इस सेवायज्ञ में शामिल होंगे। इस शाला प्रवेशोत्सव के दौरान महानुभाव स्कूल प्रबंधन समिति (एसएमसी) के साथ बैठकर स्कूल की शैक्षणिक उपलब्धियों के साथ-साथ भौतिक सुविधाओं और अन्य उपलब्धियों की समीक्षा करेंगे। पूरे राज्य में इस शाला प्रवेशोत्सव के तहत एएएमसी, अभिभावकों और ग्रामीणों की भागीदारी से बच्चों का शाला नामांकन उत्सवमय और प्रेरक बनेगा।

और उन्हें अग्रणी भूमिका निभाते हुए लोगों की समस्याओं का समयबद्ध एवं प्रभावी समाधान करना चाहिए।

मुख्यमंत्री श्री भूपेंद्र पटेल ने राज्य स्वागत में आई सभी प्रस्तुतियों के प्रति जनहितकारी संवेदनशीलता दिखाते हुए त्वरित निराकरण का दृष्टिकोण अपनाया और प्रो-पीपल गवर्नेंस का अनुभव कराया। इस राज्य स्वागत कार्यक्रम में मुख्यमंत्री के अपर मुख्य सचिव संजीव कुमार, सचिव डॉ. अजय कुमार तथा विशेष कार्य अधिकारी श्री धीरज पारिख तथा श्री राकेश व्यास सहित संबंधित विभागों के वरिष्ठ सचिव उपस्थित रहे।

मुख्यमंत्री के समक्ष आई सभी प्रस्तुतियों के संदर्भ में संबंधित जिला कलेक्टर एवं प्रशासनिक अधिकारी वीडियो कॉन्फ्रेंस के माध्यम से जुड़े और आवश्यक पूरक विवरण तथा जानकारी उपलब्ध कराई।

'गाँडजिला अल नीनो' की आहट से बढ़ी चिंता, मानसून पर संकट के बादल, सूखे-बाढ़ दोनों का खतरा

नई दिल्ली। दुनिया के मौसम वैज्ञानिकों की निगाहें इन दिनों प्रशांत महासागर पर टिकी हुई हैं, जहां समुद्र के भीतर तेजी से जमा हो रही गर्मी एक बार फिर वैश्विक मौसम संतुलन को चुनौती देती दिखाई दे रही है। वैज्ञानिकों का मानना है कि वर्ष 2026 में विकसित हो रही अल नीनो की स्थिति आने वाले महीनों में और अधिक शक्तिशाली रूप ले सकती है। यदि मौजूदा संकेत सही साबित होते हैं तो यह पिछले तीन दशकों के सबसे प्रभावशाली अल नीनो घटनाक्रमों में शामिल हो सकता है। इसका असर भारत सहित दक्षिण एशिया, ऑस्ट्रेलिया, इंडोनेशिया, अफ्रीका और अमेरिका के कई हिस्सों में दिखाई देने की आशंका है, जहां कहीं सूखा तो कहीं बाढ़ जैसी चरम मौसमी परिस्थितियां पैदा हो सकती हैं।

नासा की जेट प्रोपल्शन लेबोरेटरी (जेपीएल) और यूरोपीय साझेदारों

द्वारा संचालित सेंटिनल-6 माइकल फ्रीलिच उपग्रह से प्राप्त ताजा आंकड़ों ने वैज्ञानिकों की चिंता बढ़ा दी है। उपग्रह ने प्रशांत महासागर में समुद्र तल की ऊंचाई में असामान्य वृद्धि दर्ज की है, जो समुद्र के भीतर जमा हो रही विशाल गर्मी का संकेत मानी जाती है। वैज्ञानिकों के अनुसार जब समुद्र का पानी गर्म होता है तो उसका आयतन बढ़ जाता है और समुद्र का स्तर ऊपर उठने लगता है। यही कारण है कि समुद्र तल की ऊंचाई को समुद्र में मौजूद ऊष्मा की मात्रा का महत्वपूर्ण संकेतक माना जाता है।

नासा के आंकड़ों के अनुसार मार्च से मई 2026 के बीच पश्चिमी प्रशांत महासागर से गर्म पानी की विशाल तरंगें, जिन्हें 'केल्विन वेव्स' कहा जाता है, पूर्व की ओर बढ़ते हुए दक्षिण अमेरिका के तटों तक पहुंच चुकी हैं। इन तरंगों ने समुद्र के भीतर जमा गर्मी को हजारों किलोमीटर



दूर तक पहुंचाया है। मई के मध्य तक पेरू और इक्वाडोर के तटों के निकट समुद्र का स्तर सामान्य से लगभग 15 सेंटीमीटर अधिक दर्ज किया गया, जो समुद्री तापमान में उल्लेखनीय वृद्धि का संकेत है। वैज्ञानिक बताते हैं कि सामान्य परिस्थितियों में प्रशांत महासागर की व्यापारिक हवाएं गर्म पानी को

एशिया और ऑस्ट्रेलिया की दिशा में धकेलती रहती हैं। इससे दक्षिण अमेरिका के तटों के पास समुद्र की गहराई से ठंडा और पोषक तत्वों से भरपूर पानी ऊपर आता रहता है। लेकिन जब ये हवाएं कमजोर और समुद्री तापमान की दिशा से भ्रमरूप पानी ऊपर आता रहता है। लेकिन जब ये हवाएं कमजोर और समुद्री तापमान की दिशा से भ्रमरूप पानी ऊपर आता रहता है। लेकिन जब ये हवाएं कमजोर और समुद्री तापमान की दिशा से भ्रमरूप पानी ऊपर आता रहता है।

दलबदल की बेशर्मी: मतदाताओं के भरोसे और लोकतांत्रिक मूल्यों पर हमला

(छगनलाल मेवाड़ा द्वारा) सूरत। भारतीय राजनीति भ्रष्टाचार में डूबी हुई प्रतीत होती है, और सिद्धांतों को खुलेआम ध्वजियां उड़ाकर किए जा रहे या किए जा रहे ये बेशर्मी दल परिवर्तन न केवल लोकतंत्र के लिए शर्मनाक हैं, बल्कि सार्वजनिक जीवन में व्यक्ति के चरित्र को भी दर्शाते हैं। ऐसे बेशर्मी दल परिवर्तनों को देखकर मुझे वर्षों पहले की एक फिल्म याद आती है। फिल्म का नाम था "दूल्हा बिकता है" और उसका शीर्षक गीत था "दूल्हा बिकता है बोलेो प्राचीचोगे"। इस गीत में देहेज प्रथा पर तीखा प्रहार किया गया था और देहेज की बुराई के खिलाफ आवाज उठाई गई थी।



का पाला बदलना, बिकना और बिक जाना लगातार चौकाने वाला है। इस तरह एक पार्टी से दूसरी पार्टी में शामिल होने की घटनाएं इतनी बढ़ गई हैं कि ऐसा लगता है जैसे हमारे देश में दलीय लोकतंत्र का कोई मतलब ही नहीं रह गया है। परिणामस्वरूप, ऐसा लगता है कि लोकतंत्र के उम्मीदवार के

रहा है। मान लीजिए, आपने एक मतदाता के रूप में किसी विचारधारा या सिद्धांत का समर्थन करने वाली पार्टी को वोट दिया है और आपके वोटों से चुना गया नेता चुनाव परिणाम आने के तुरंत बाद उस पार्टी में शामिल हो जाता है जिसके विरुद्ध आपने वोट दिया था, तो आपको कितना आश्चर्य होगा? इस तरह के आश्चर्य पूरे देश में लोगों को लगातार महसूस हो रहे हैं।

यह निराशाजनक है कि जब सत्ता की दौड़ में कोई पार्टी कमजोर पड़ती है, तो उसके नेता स्वायत्तक राजनीति खेलने लगते हैं। और जब निर्वाचित प्रतिनिधि सत्ता के लालच में सिद्धांतों का त्याग कर देते हैं, तो ये बागी लोकतंत्र को छुरा घोंपने के अलावा कुछ नहीं करते। बेशर्मी और शर्म कहां गई?

दूसरी पार्टी में शामिल होने की कोई समयसीमा नहीं है। नेता तो जरा भी शर्म महसूस नहीं करते, यहाँ तक कि मूल्यों और सिद्धांतों की बात करने वाली पार्टियाँ भी इस तरह दलबदलुओं का स्वागत करने में संकोच नहीं करती। परिणामस्वरूप, ऐसा लगता है कि लोकतंत्र के मूल्यों का नाश हो

दूसरी पार्टी में शामिल होने की कोई समयसीमा नहीं है। नेता तो जरा भी शर्म महसूस नहीं करते, यहाँ तक कि मूल्यों और सिद्धांतों की बात करने वाली पार्टियाँ भी इस तरह दलबदलुओं का स्वागत करने में संकोच नहीं करती। परिणामस्वरूप, ऐसा लगता है कि लोकतंत्र के मूल्यों का नाश हो

वडोदरा स्टेशन पर इंजीनियरिंग कार्य हेतु लिए गये ब्लॉक के चलते कुछ ट्रेनों के ठहराव में अस्थायी परिवर्तन

यात्रियों को बेहत, सुरक्षित एवं आधुनिक रेल सेवाएं उपलब्ध कराने के उद्देश्य से पश्चिम रेलवे द्वारा वडोदरा स्टेशन पर यार्ड रीमॉडलिंग तथा कई इलेक्ट्रॉनिक इंटरलॉकिंग (EI) प्रणाली स्थापित करने का महत्वपूर्ण कार्य किया जा रहा है। इस महत्वाकांक्षी परियोजना के तहत निर्धारित नॉन-इंटरलॉकिंग कार्य के कारण कुछ ट्रेनों के वडोदरा स्टेशन पर निर्धारित ठहराव में अस्थायी परिवर्तन किया गया है। पूर्व में घोषित तिथियों में बदलाव किया गया है।

भावनगर मंडल के वरिष्ठ मंडल वाणिज्य प्रबंधक श्री अतुल कुमार त्रिपाठी के अनुसार, रेल प्रशासन द्वारा यात्रियों की सुविधा को ध्यान में रखते हुए प्रभावित ट्रेनों के वैकल्पिक ठहराव निम्नलिखित स्टेशनों पर उपलब्ध कराए गए हैं, जिससे यात्रियों को न्यूनतम असुविधा हो।

प्रभावित ट्रेनों का विवरण निम्नानुसार है—
विश्वामित्री (VS) स्टेशन पर अस्थायी ठहराव प्रदान किया जाएगा:
► ट्रेन संख्या 09208 भावनगर टर्मिनस—बांद्रा टर्मिनस स्पेशल दिनांक 25 जून 2026 को वडोदरा के स्थान पर विश्वामित्री स्टेशन पर 23:15 बजे से 23:20 बजे तक ठहरेगी।
► ट्रेन संख्या 09207 बांद्रा टर्मिनस—भावनगर टर्मिनस स्पेशल दिनांक 26 जून 2026 को विश्वामित्री स्टेशन पर 15:40 बजे से 15:45 बजे तक ठहरेगी।
► ट्रेन संख्या 09017 बांद्रा टर्मिनस—वेरावल स्पेशल दिनांक 28 जून 2026 को विश्वामित्री स्टेशन पर 20:40 बजे से 20:45 बजे तक ठहरेगी।
► ट्रेन संख्या 09018 वेरावल—बांद्रा

टर्मिनस स्पेशल दिनांक 29 जून 2026 को विश्वामित्री स्टेशन पर 22:00 बजे से 22:05 बजे तक ठहरेगी।
► ट्रेन संख्या 19016 पोरबंदर—दादर सौराष्ट्र एक्सप्रेस दिनांक 29 एवं 30 जून 2026 को विश्वामित्री स्टेशन पर 10:09 बजे से 10:11 बजे तक ठहरेगी।
► ट्रेन संख्या 19015 दादर—पोरबंदर सौराष्ट्र एक्सप्रेस दिनांक 30 जून एवं 01 जुलाई 2026 को विश्वामित्री स्टेशन पर 17:42 बजे से 17:43 बजे तक ठहरेगी।
► ट्रेन संख्या 22963 बांद्रा टर्मिनस—भावनगर टर्मिनस सुपरफास्ट दिनांक 29 जून 2026 को विश्वामित्री स्टेशन पर 22:10 बजे से 22:15 बजे तक ठहरेगी।
► ट्रेन संख्या 22935 बांद्रा टर्मिनस—पालीताना एक्सप्रेस दिनांक 30 जून 2026 को विश्वामित्री स्टेशन पर 22:10 बजे से 22:15 बजे तक ठहरेगी।

पश्चिम रेलवे द्वारा पोरबंदर यार्ड के रीमॉडलिंग कार्य के अंतर्गत लिए जाने वाले ट्रैफिक एवं पावर ब्लॉक (TWO-56) के कारण भावनगर मंडल से होकर चलने वाली कुछ रेलगाड़ियों के संचालन में अस्थायी परिवर्तन किया जाएगा। भावनगर मंडल के वरिष्ठ मंडल वाणिज्य प्रबंधक श्री अतुल कुमार त्रिपाठी के अनुसार प्रभावित ट्रेनों का विस्तृत विवरण इस प्रकार है:-
पूर्णतः निरस्त रेलगाड़ियां
दिनांक 23 जून 2026 से 04 जुलाई 2026 तक निम्न रेलगाड़ियां पूर्णतः निरस्त रहेंगी –
► 59214 पोरबंदर—भाणवड
► 59213 भाणवड—पोरबंदर
► 59216 पोरबंदर—भाणवड
► 59215 भाणवड—पोरबंदर

► 59563 राजकोट—पोरबंदर
► 59564 पोरबंदर—राजकोट
आंशिक रूप से निरस्त रेलगाड़ियां
गाड़ी संख्या 59557 पोरबंदर—भावनगर तथा गाड़ी संख्या 59560 भावनगर—पोरबंदर को दिनांक 30 जून 2026 से 04 जुलाई 2026 तक पोरबंदर—राणावाव—पोरबंदर खंड के मध्य आंशिक रूप से निरस्त किया जाएगा। ये रेलगाड़ियां राणावाव स्टेशन से शॉर्ट टर्मिनेट एवं शॉर्ट ओरिजिनेट होंगी। अर्थात् यह ट्रेन भावनगर—राणावाव के बीच संचालित होगी।
पुनर्निर्धारित (Rescheduled)

रेलगाड़ी संख्या 59562 पोरबंदर—राजकोट को दिनांक 30 जून 2026 से 04 जुलाई 2026 तक पोरबंदर से निर्धारित समय से 1 घंटा विलंब प्रस्थान कराया जाएगा।
विविनियमित (Regulated) रेलगाड़ी
गाड़ी संख्या 19015 दादर—पोरबंदर एक्सप्रेस को दिनांक 30 जून 2026 से 04 जुलाई 2026 तक राजकोट स्टेशन पर 1 घंटा 05 मिनट विनियमित (Regulate) किया जाएगा। रेल प्रशासन यात्रियों से अनुरोध करता है कि यात्रा आरंभ करने से पूर्व अपनी रेलगाड़ी की स्थिति की जानकारी रेलवे पृष्ठलाभ सेवा, NTES अथवा रेलवे की अधिकृत वेबसाइट www.enquiry.indianrail.gov.in एवं मोबाइल ऐप से प्राप्त कर लें। यात्रियों को होने वाली असुविधा के लिए खेद है।

पेट्रोल पंप पर होमवर्क करता छात्र: कड़ी मेहनत और सपनों की एक प्रेरणादायक छवि



(छगनलाल मेवाड़ा द्वारा) सूरत। हमारे यहाँ एक कहावत है कि जो नाचना नहीं चाहता, उसका आँगन टेढ़ा होता है,

यानी जो काम नहीं करना चाहता, वह तरह-तरह के बहाने बनाकर काम टालता रहता है। तो, इस तस्वीर में

एक बच्चा लगन और एकाग्रता से अपना स्कूल का होमवर्क कर रहा है, जो उसकी पढ़ाई प्रति सच्ची लगन और कुछ नने की इच्छा को दर्शाता है। ह तस्वीर रैंडर रोड पर षष टावर के सामने स्थित हावीर पेट्रोल पंप की है, हां इस छात्र के पिता काम रते हैं। इसलिए यह बच्चा वेवारा और छुट्टियों में अपने ाता के पास आकर इस तरह अपना होमवर्क करता है। एक ओर अन्य छात्र क्रिकेट या मोबाइल में व्यस्त रहकर छुट्टियों का आनंद ले रहे हैं, वहीं तस्वीर में दिख रहा बच्चा

अपने माता-पिता की आशाओं और सपनों को पूरा करने के लिए कड़ी मेहनत कर रहा है। साथ ही, अपने पिता की मेहनत को अपनी आंखों के सामने देखकर यह बच्चा सोच रहा होगा कि मैं कब कामाऊंगा और अपने माता-पिता की मदद करूंगा? ऐसे बच्चे और उनके माता-पिता धन्य हैं जो अपने बच्चों की शिक्षा के लिए इतनी कठिनाइयों का सामना करते हैं। ईश्वर करें ऐसे बच्चे बड़े होकर अपने माता-पिता के साथ समाज का नाम रोशन करें। मेरी यही प्रार्थना है, शुभकामनाएं।

कच्चे तेल में बड़ी गिरावट, ब्रेंट क्रूड 80 डॉलर से नीचे, भारत के लिए राहत के संकेत

नई दिल्ली। अंतरराष्ट्रीय ऊर्जा बाजार में कच्चे तेल की कीमतों में नरमी देखने को मिली है, जिससे वैश्विक अर्थव्यवस्था और विशेषकर तेल आयातक देशों को राहत मिलने की उम्मीद जगी है। अमेरिका और ईरान के बीच रिवटजरलैंड में हुई शांति वार्ता के बाद पश्चिम एशिया में आपूर्ति बाधित होने की आशंकाएं कम हुई हैं, जिसके कारण निवेशकों की चिंता घट गई और क्रूड ऑयल की कीमतों में गिरावट दर्ज की गई। सोमवार को वैश्विक बाजार में ब्रेंट क्रूड करीब 1.17 प्रतिशत की गिरावट के साथ 79 डॉलर प्रति बैरल के आसपास कारोबार करता नजर आया। कारोबार के दौरान इसकी कीमत 79.63 डॉलर प्रति बैरल तक दर्ज की गई, जबकि शुरुआती सत्र में यह 82 डॉलर प्रति बैरल के पार पहुंच गया था। इसी तरह अमेरिकी बेंचमार्क वेस्ट टेक्सास इंटरमीडिएट (WTI) क्रूड भी लगभग 75.96 डॉलर प्रति बैरल के स्तर पर आ गया।

बाजार विश्लेषकों के अनुसार कच्चे तेल में आई यह गिरावट मुख्य रूप से भू-राजनीतिक तनाव में कमी और आपूर्ति में संभावित स्थिरता की उम्मीदों का परिणाम है। ईरान से तेल निर्यात में संपादित वृद्धि

और वैश्विक आपूर्ति श्रृंखला के सुचारू होने की आशंका ने निवेशकों के मनोभाव को बदल दिया है। पहले जहां कीमतें 82 डॉलर प्रति बैरल के ऊपर जा रही थीं, वहीं मिलने की उम्मीद ने तेजी पर ब्रेक लगता दिखाई दे रहा है। भारत जैसे बड़े तेल आयातक देशों के लिए यह गिरावट आर्थिक दृष्टि से सकारात्मक संकेत मानी जा रही है। कच्चे तेल की कीमतों में कमी आने से देश के आयात बिल पर सीधा असर पड़ता है और विदेशी मुद्रा घंटा पर दबाव घट सकता है। भारत अपनी जरूरत का बड़ा हिस्सा आयात के जरिए पूरा करता है, इसलिए वैश्विक कीमतों में मामूली बदलाव भी घरेलू अर्थव्यवस्था को प्रभावित करता है। विशेषज्ञों का कहना है कि यदि कच्चे तेल की कीमतें इसी स्तर पर बनी रहती हैं या और गिरावट आती है, तो आने वाले महीनों में चालू खाते के घाटे (CAD) में भी सुधार देखने को मिल सकता है। हालांकि, इसके बावजूद यह जरूरी नहीं है कि इसका सीधा लाभ तुरंत उपभोक्ताओं को मिले। घरेलू बाजार में पेट्रोल और डीजल की कीमतों में तत्काल कमी की संभावना कम है। ईरान से तेल निर्यात में संपादित वृद्धि

कीमतों में उतार-चढ़ाव के बावजूद अपने पुराने स्टॉक की लागत, लॉजिस्टिक खर्च और पूर्व में हुए नुकसान की भरपाई को प्राथमिकता देती हैं। ऐसे में उपभोक्ताओं तक राहत पहुंचने में कुछ समय लग सकता है। बाजार विशेषज्ञ यह भी मानते हैं कि आने वाले दिनों में कच्चे तेल की कीमतों का दिशा काफी हद तक पश्चिम एशिया की राजनीतिक स्थिति, वैश्विक मांग-आपूर्ति संतुलन और प्रमुख तेल उत्पादक देशों की नीतियों पर निर्भर करेगी। यदि भू-राजनीतिक तनाव और कम होता है तो कीमतों में और नरमी संभव है, लेकिन किसी भी नए संकट की स्थिति में फिर से तेजी भी देखी जा सकती है। फिलहाल निवेशकों की नजरें ओपेक देशों की आगामी बैठकों और अमेरिका की ऊर्जा नीति पर टिकी हुई हैं। इन दोनों कारकों से यह तय होगा कि वैश्विक तेल बाजार में स्थिरता बनी रहती है या फिर एक बार फिर अस्थिरता लौटती है। कुल मिलाकर मौजूदा गिरावट भारत सहित कई देशों के लिए राहत का संकेत है, लेकिन यह राहत कितनी स्थायी होगी, यह आने वाले वैश्विक घटनाक्रमों पर निर्भर करेगा।



(पालडी) के प्रसिद्ध त्वचा रोग विशेषज्ञ डॉ. शादाव दोई (MD Dermatology) को जाता है। POTENZA जैसी आधुनिक तकनीक और अनुभवी विशेषज्ञता के संयोजन से अब त्वचा को लंबे समय तक स्वस्थ, युवा और चमकदार बनाए रखना संभव होगा। यह त्वचा उपचार के क्षेत्र में एक नए अध्याय की शुरुआत है। मुंहासों के गहरे निशान और गड़बड़ों के कारण महिलाओं और पुरुषों दोनों का आत्मविश्वास प्रभावित होता है। POTENZA जैसी उन्नत तकनीक इन समस्याओं के समाधान में प्रभावी साबित हो सकती है।

POTENZA तकनीक क्या है?
POTENZA एक अत्याधुनिक Microneedling Radiofrequency (MNRFR) प्लेटफॉर्म है। त्वचा विज्ञान (Dermatology) के क्षेत्र में इसे अत्यंत प्रभावी उपचार माना जाता है। इस तकनीक में सूक्ष्म सुइयों के माध्यम से त्वचा की गहरी परतों तक रेडियोफ्रीक्वेंसी ऊर्जा पहुंचाई जाती है। यह प्रक्रिया त्वचा के भीतर मौजूद कोलेजन (Collagen) और इलास्टिन (Elastin) नामक प्रोटीन के प्राकृतिक उत्पादन को बढ़ाती है, जिससे त्वचा को नया जीवन मिलता है और उसका पुनरुद्धार होता है।

POTENZA के प्रमुख लाभ

- मुंहासों के गहरे दाग और बड़े पोरस (Pores) की समस्या को कम कर त्वचा को अधिक मुलायम बनाता है।
- चेहरे की फाइन लाइन्स, झुर्रियों और ढीली पड़ चुकी त्वचा को टाइट कर युवा रूप प्रदान करता है।
- त्वचा के काले धब्बों और असमान टेक्सचर को सुधारकर प्राकृतिक निखार और चमक लाता है।
- शरीर पर मौजूद स्ट्रेच मार्क्स तथा कुछ प्रकार के बाल झड़ने (Hair Loss) की समस्याओं में भी उपयोगी है।